विभिन्न अन्तर्सांस्कृतिक कार्टून चरित्रों का बच्चों पर सांस्कृतिक प्रभाव, एक अध्ययन (5 से 8 वर्ष के बच्चों पर प्रभाव के संदर्भ में)

Dr Bed Prakash,
Ph.D.(Mass Comm. & Journalism),
Email - bpldraj@gmail.com

सारांश

बच्चों के मनोरंजन के लिए हम जिन कार्टून चरित्रों का निर्माण करते है, और उनको दिखाते है इससे बच्चे प्रभावित होते है। व्यावहारिक रूप से देखा जाय तो आज के बच्चे बहुत कम उम्र में ही मेच्योर्ड नजर आ रहे हैं। इसकी पुष्टि इस शोध पत्र के माध्यम से हुई है। बच्चों का कार्टून चरित्रों के प्रति लगाव है। यदि इसके मूल कारण में जाये ता पायेंगे कि इसके पीछे जो माध्यम कार्य कर रहा है, वह है टेलीविजन और उस पर दिखाए जाने वाले एनिमेटेड कार्टून कार्यक्रम और उन कार्यक्रमों के चरित्र जो तरह–तरह के किरदारों को जीवन्त करते है। जिसको बच्चे बहुत चाव से देखते है। यही कारण है उनका, उन पर सीधा प्रभाव पड़ रहा है। क्योकि बच्चे जो देखते, सुनते उन्हीं की नकल करने की कोशिश करते है। इस तरह की नकल बड़े बच्चों की तुलना में छोटी उम्र के बच्चों में ज्यादा दिखाई देता है। बच्चों के प्रिय कार्टून चरित्रों में सिनचन डोरेमान, छोटा भीम आदि सांस्कृतिक, अंतर्सांस्कृतिक, प्रभाव को दर्शाता है।

प्रमुख शब्द : बच्चे, मनोरंजन, कार्टून चैनल, एनिमेटेड कार्टून चरित्र, सांस्कृतिक, अंतर्सांस्कृतिक

परिचय

देखा जाय तो जबसे प्राइवेट टेलीविजन चैनलों प्रसार बढ़ा है तबसे इन चैनलों पर तरह–तरह के कार्यक्रमों प्रसारण भी बढ़ा है। यही नहीं इन चैनलों पर दिखाए जाने वाले विभिन्न एनिमेटेड कार्टून कार्यक्रमों के चरित्रों के प्रति बच्चों का लगाव भी बढ़ा है। कार्टून का शाब्दिक अर्थ चित्र का कच्चा खाका या रफ डिजाइन बनाना होता है। सन् 1948 में इंगलैण्ड के पार्लियामेंट के भित्तियों पर चित्र के कच्चें खाकों की एक प्रर्दशनी आयोजित की गयी थी। इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध व्यंग्य चित्रकार (कार्टूनिस्ट) श्री लीच को यह कार्य सौपा गया था। ये चित्र इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध हास्यपत्र 'पंच' में प्रकाशित हुए थे, उसी समय से कार्टून शब्द का अर्थ लोगों के समझ में आया और इसका प्रयोग होने लगा।[1'']

भारत में 1954 में फिल्म प्रभाग के अन्तर्गत कार्टून फिल्म इकाई गठन के बाद से ही एनिमेशन संप्रेषण के एक शक्तिशाली साधन के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है। प्रथम पंचवषीय योजना का सुभारम्भ के समय से ही यह सोचा जाने लगा कि विकास संसाधनों और अभिव्यक्तियां से वंचित लोगो के सरकारी योजनाओं के विषय में बताने के लिए एनिमेशन एक अच्छा

विकल्प हो सकता है। ''जो संदेश अन्य माध्यमों के जरिए आम लोगों तक नहीं पहुचाया जा सकता, उसे एनिमेशन कार्टून के जरिए पहुचाया जा सकता है।[2]''

भारत की प्रथम एनिमटेड फिल्म ''एक अनेक और एकता'' है और अगर श्रृंखला की बात करें तो पहली टेलीविजन श्रृंखला ''एडवेंचर दि तेनालीराम'' है। एक अनेक एकता दूरदर्शन के फिल्म डिवोजन विभाग भारत सरकार के सौजन्य से तैयार कर दूरदर्शन पर 1974 में प्रसारित किया गया, यह बच्चों के लिए अपने समय की सबसे लोकप्रिय एवं व्यवहारिक, शैक्षणिक, एकता का संदेश देने वाली फिल्म है।[3]'' टेलीविजन'' घर के अन्दर रहने के बावजूद परिवार के बन्धन को ज्यादा मजबूत नहीं करता तब भी जब यह एकता का झूठा भ्रम पैदा कर रहा होता है।[4]'' बच्चों के लिए ऐसे कार्यक्रम बनाये जो बच्चों के भविष्य निर्माण में सहायक सिद्ध हो सके। वह इस चिन्ता को उस उपभोक्तावादी बाजार, संस्कृति के साथ जोड़कर देखते हैं क्योंकि उन्हें तो अपने–अपने चैनल चलाने के लिए जो संसाधन एवं पैसा चाहिए।[5]'' देखा जाय तो कार्टून एनिमेटेड चरित्रों का अर्थ ऐसे पात्र से है। जो कम्प्यूटर या हाथ से निर्मित किये गये हो और चलते, फिरते, बोलते हों और ''थ्री डी चरित्र वास्तविकता के इतने निकट है कि आज मनुष्य के लिए कल्पना करना कठिन है कि सचमुच यह पात्र वास्तविक है या निर्मित।[6]''

आज टेलीविजन कार्टून कार्यक्रमों के प्रसारण में तेजी आने के कारण में बदलाव आया है। अब हर सभी लोगों के लिए तरह–तरह के कार्यक्रम मिलने लगे है। जिनको लोग डीटीएच, केबिल टीबी के माध्यम से देख रहे है। नये–नये चैनल और भिन्न–भिन्न कार्यक्रमों के नाते दर्शक भी अपनी पसन्द की चीजों, कार्यक्रमों को देखते है। जहां तक बच्चों के लिए कार्टून धारावाहिकों का प्रश्न है तो ऐसे तमाम एनिमेटेड कार्टून चैनल जैसे–पोगो, हंगामा, वाल्ट डिजनी, कार्टून नेटवर्क, नीक, डिज्नी एक्सी डी, छुट्टी, एनिमाक्स है जो एनिमेटेड कार्टून चरित्रों के लिए प्रसारण प्रारम्भ कर दिये है। जसे डोरेमान, छोटा भीम, रोल न0 21,निन्जाहथौरी, बेनटेन, टाम एण्ड जैरी, ओगी एण्ड काकरोच, सिनचन, किटरेट्सू, लव–कुश, अल्ट्रा बी, बसकरो हेनरी, आर्ट–अटैक, पावर रेन्जर, मोटू–पतलू, गुजुरा, बाल हनुमान, लिटिल कृष्णा, कुम्भकरन, परमान, रीचीरिच, मिक्की माउस, और भी बहुत सारे एनिमेटेड धारावाहिक दिखाये जा रहे हैं। इन एनिमेटेड धारावाहिकों में कुछ सांस्कृतिक और कुछ अंतर्सांस्कृतिक भी है।

शोध उद्देश्य

अन्तर्सांस्कृतिक कार्टून चरित्रों का बच्चों पर सांस्कृतिक प्रभाव का अध्ययन

शोध परिकल्पना – विभिन्न एनिमेटेड कार्टून चरित्रों को देख कर बच्चे उनसे प्रभावित हो रहे है।

शोध विधि – गोरखपुर शहर के विभिन्न स्कूलों में पढ़ने वाले 5 से 8 वर्ष सभी बच्चों में नानप्रोबैबिलीटि सैम्पलिंग में परपोशिव सैम्पलिंग के माध्यम से 200 बच्चों का चयन किया गया है। आकड़ों के संग्रह के लिए पाथमिक स्रोत में साक्षात्कार–अनुसूची और द्वितीयक सामग्री स्रोत में समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, शोधपत्र, विषय सम्बंधित इतिहास, इन्टरनेट, पकाशित व अप्रकाशित लेख, आदि को सम्मिलत किया गया है।

सारिणी संख्या–1

प्रायः आप कितने घंटे कार्टून कार्यक्रम देखते हैं?

क्रम संख्या	स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	अनिश्चित	81	40.50
2	एक घंटे लगभग	53	26.50
3	दो घंटे लगभग	41	20.50
4	तीन घंटे लगभग	25	12.50
योग		200	100.00

सारिणी संख्या 1 में उत्तरदाताओं द्वारा टेलीविजन में कार्टून कार्यक्रम देखने की स्थिति को दर्शाया गया है। इस सारिणी में सर्वाधिक 40.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना की वे अनिश्चित समय तक कार्टून कार्यक्रम देखते हैं कार्टून देखने के विषय में उनकी कोई निश्चित सीमा नही हैं। 26.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने एक घंटे कार्टून देखने की बात स्वीकार किये हैं और 20.50 प्रतिशत उत्तरदाता 2 घंटे कार्टून कार्यक्रम देखने की बात माने हैं। जबकि 12.50 प्रतिशत उत्तरदाता 3 तीन घंटे कार्टून कार्यक्रम देखने की बात स्वीकार किये। इस प्रकार इस सारिणी से स्पष्ट होता है सर्वाधिक 40.50 प्रतिशत उत्तरदाता अनिश्चित समय तक कार्टून कार्यक्रम देखते जो किसी निश्चित समय का लेखा जोखा नहीं रखते हैं वे इस बात के पोषक है कि उन्हें कार्टून देखना है, तो देखना है। इस सारिणी से यह भी पता चलता है, कि बच्चे समय के महत्व को तो समझते हैं, किन्तु समय के प्रति ज्यादा गम्भीर नहीं हैं, ऐसे में उनको समय के महत्व के विषय में सावधानी से समझाने की आवश्यकता है, ताकि समय का सदुपयोग हो सके।

सारिणी संख्या–2

निम्न कार्टून चरित्रों मे से अपका सबसे प्रिय कार्टून चरित्र कौन है ? जिससे आप ज्यादा प्रभावित है?

क्रम संख्या	स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	छोटाभीम	32	16.00
2	डोरेमान	41	20.50
3	बेनटेन	10	05.00
4	टाम एण्ड जैरी	20	10.00
5	सिनचन	30	15.00
6	लव–कुश	10	05.00
7	बसकरो हेनरी	13	06.50
8	पावर रेन्जर	10	05.00
9	सभी	20	10.00
10	अन्य	14	07.00
योग		200	100.00

सारिणी संख्या 2 में सर्वाधिक उत्तरदाताओं द्वारा पसन्द किए जाने वाले कार्टून चरित्रों में 41.50 प्रतिशत डोरेमान प्रमुख हैं, इसके बाद 16 प्रतिशत छोटाभीम, 15 प्रतिशत सिनचन, आदि कार्यक्रमों को बच्चे ज्यादा पसन्द करते हैं। इसके साथ ही 5.00 प्रतिशत बेनटेन, 10.00 प्रतिशत टाम एण्ड जैरी, 5.00 प्रतिशत लवकुश, 6.50 प्रतिशत बसकरो हेनरी, 5.00 प्रतिशत पावर रेन्जर, जबकि 10.00 प्रतिशत ऐसे उत्तरदाता है जो सभी कार्टून कार्यक्रमों को पसन्द करते हैं। और 7.00 प्रतिशत में अन्य को। इस पकार सारिणी से निष्कर्ष निकलता है कि सर्वाधिक उत्तरदाताओं द्वारा पसन्द किए जाने वाले कार्टून कार्यक्रमों मे डोरमान, सिनचन, और छोटाभीम आते हैं। इसके अलावा दर्शाये गये सारिणी में अन्य कार्टून कार्यक्रम है, जो अधिकतर उत्तरदातओं द्वारा पसन्द किए गये, जिससे यह ज्ञात होता है कि सबसे ज्यादा देखे जाने वाले कार्टून चरित्र सांस्कृतिक और अंतर्सांस्कृतिक प्रभाव को दर्शाते हैं।

सारिणी संख्या–3

क्या आप अपने प्रिय कार्टून चरित्र के विभिन्न कार्य–व्यवहार, चीजों, जैसे–चित्र, आवाज, बोलने के तरीके, रहन–सहन, वेश–भूषा, घुमने–फिरने, डांस करने–गाना गाने, हसने–हसाने सजने–संवरने, खाने–पीने, उठने–बैठने, सोने–रोने घरों की बनावट, सजावट, नदी–तालाब, पेड़–पौधें, घास–झाड़िया इत्यादि से प्रभावित होते है?

क्रम संख्या	स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	87	43.50
2	नहीं	59	29.50
3	थोड़ा–बहुत	34	17.00
4	पता नहीं	20	10.00
योग		200	100.00

सारिणी संख्या 3 में अधिकतर 43.50 प्रतिशत उत्तरदाता अपने प्रिय कार्टून चरित्र के विभिन्न कार्य–व्यवहार, से प्रभावित होते हैं। 29.50 प्रतिशत उत्तरदाता प्रभावित नहीं होते। 17 प्रतिशत उत्तरदाता थोड़ा–बहुत स्वीकार किए हैं, जबकि 10.00 प्रतिशत उत्तरदाता इसका उत्तर देने में असमर्थता प्रकट किए। इस प्रकार इस सारिणी से निष्कर्ष निकलता है कि सर्वाधिक 43.50 प्रतिशत उत्तरदाता अपने प्रिय कार्टून चरित्र के विभिन्न कार्य–व्यवहार, चीजों जैसे–चित्र, आवाज, बोलने के तरीके, रहन–सहन, घुमने–फिरने, डांस करने–गाना गाने, हसने–हसाने सजने–संवरने, खाने–पीने, उठने–बैठने, सोने–रोने वेश–भूषा, घरों की बनावट, सजावट, नदी–तालाब, पेड़–पौधे, घास–झाड़िया इत्यादि से प्रभावित होते हैं, जो उनके व्यवहारिक बदलाव को दर्शाता है। जिनको बच्चे पसन्द भी करते है।

सारिणी संख्या–4

आपका प्रिय कार्टून अपने जादुई गैजेट से बड़े–बड़े तरह–तरह के कारनामें करता है, क्या आपका भी मन वैसा करने को करता है?

क्रम संख्या	स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	102	51.00
2	नही	62	31.00
3	थोड़ा–बहुत	23	11.50
4	पता नहीं	13	6.50
योग		200	100.00

सारिणी संख्या 4 में सर्वाधिक 51.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उनका भी मन करता है कि अपने प्रिय कार्टून चरित्र के जादुई गैजेट की तरह कारनामें करने को। 31.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि वे वैसा नहीं करते। 11.50 थोड़ा–बहुत प्रभावित हैं, जबकि 6.50 प्रतिशत उत्तर नहीं दे पाये। इस प्रकार सारिणी से निष्कर्ष निकलता है कि 51.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मन अपने प्रिय कार्टून चरित्र के जादुई गैजेट की तरह के कारनामे करन को करता है।

प्रभाव

अन्तरसांस्कृतिक कार्टून चरित्रों का भारतीय बच्चें के उपर प्रभाव पड़ा है, शोध से ज्ञात हुआ है कि विदेशी कार्टून चरित्रों में सबसे ज्यादा डोरेमान, सिनचन, को उत्तरदाताओं द्वारा पसन्द किया गया है। बच्चे समय के महत्व को तो समझते हैं, किन्तु समय के प्रति ज्यादा गम्भीर नहीं हैं, ऐसे में उनको समय के महत्व के विषय में सावधानी से समझाने की आवश्यकता है, ताकि समय का सदुपयोग हो सके।

निष्कर्ष

कार्टून देखने के प्रति बच्चों का रूझान बहुत ही अधिक है। प्रस्तुत शोध पत्र में 5 से 8 वर्ष के जिन बच्चों को शोध का आधार बनाया गया है उनकी उम्र कम होने के नाते उनमें उतनी परिपक्ता नहीं है जितनी 8 वर्ष से अधिक के बच्चों में होती है। इसलिए छोटे बच्चे कार्टून चरित्रों द्वारा प्रयोग में लायी जाने वाली चीजों, उनके द्वारा किये जाने वाले विभिन्न कार्य–व्यवहार, चीजों, जैसे–चित्र, आवाज, बोलने के तरीके, रहन–सहन, वेश–भूषा, घरों की बनावट, सजावट, नदी–तालाब, पेड़–पौधें, घास–झाड़िया, सजने–संवरने, खाने–पीने, उठने–बैठने, सोने–रोने इत्यादि से प्रभावित होते हैं। इसके साथ उनकी नकल भी करते है। यही नहीं बच्चों के मन में उनके प्रिय चरित्रों द्वारा प्रयोग में लायी जाने वाली विभिन्न गैजेट को पाने की जिज्ञासा ज्यादा होती है। उनका मन करता है कि अगर उनके पास भी गैजेट होता तो वह भी तरह तरह के कारनामे करते जा उनके व्यावहारिक बदलाव को दर्शाता है।

सुझाव

एक तरह से कहा जाय तो बच्चों के प्रति माता–पिता को सचेत रहने की आवश्यकता है जिससे उनका सही मार्ग दर्शन किया जा सके। क्योंकि घर के अन्दर रखे गये बुद्धु बाक्स के प्रति हम यदि सतर्क नहीं रहेंगे तो उससे फायदा होने के साथ नुकसान भी हो सकता है। यही नहीं घर के अन्य सदस्यों को भी इस बात की भनक होनी चाहिए कि बच्चा जो कार्यक्रम देख रहा है, उस कार्यक्रम का लक्ष्य उस बच्चे को किस दिशा में मोड़ रहा है, इस बात को तन्मयता से समझ कर बच्चे को उन कार्यक्रमों से उपजने

वाले वाले परिणाम के विषय में सावधानी से बात करनी चाहिए। जिससे उनका मार्गदर्शन हो सके।

संदर्भ

- जैन, प्रो0 रमेश, ''जनसंचार में कैरियर, सबलाइन पब्लिकेशन, जयपुर, 2005 पृ0–73,74,
- योजना, प्रकाशन विभाग,नई दिल्ली,17 अगस्त 2011
- कश्यप, डॉ0 श्याम व कुमार मुकेश, ''टेलीविजन की कहानी' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ–143.144
- हिमलेवेट, एच0 टी0 और अन्य, ''टेलीविजन एण्ड द चाइल्ड, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1958, पृष्ठ 383
- हिन्दुस्तान समाचार पत्र, लखनऊ संस्करण 11 अक्टूबर 2010
- नकवी, हेना, ''पत्रकारिता एवं जनसंचार, उपकार प्रकाशन आगरा, 2000 पृष्ठः 120–126

Copyright © 2016 *Dr Bed Prakash*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.